स्वर्णभारत

2016 ''उज्वल भविष्य''

राजगुरु व पिता : पं.गुलाबराव धोटे

लेखक : लीलाधर धोटे

आओ भारत निर्माण करें!

एक आस्था, एक कर्म, एक संकल्प

सारांश

लेखक ने देश की वर्तमान गम्भीर हालत को देखते हुए बड़ा अफसोस जाहिर करते हुए, ईश्वर से देश के उज्ज्वल भविष्य की कामनाये करते हुए अध्यात्म के आधार पर इस किताब को लीखा है।

जिसमें आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए समाधान के नियम व शर्तें भारत सरकार से लागू कराने की माँग की है। और इसी के साथ, हर भारतीय नागरिक को अपने नियम, व्यक्तित्व व अधु अधिकारी का सही सत्उपयोग करने की अपिल की है।

क्योंकि,

देश/वतन हमारी शान है...हमारा वजूद है...हमारा घर और इस देश में रहने वाले हर नागरिक हमारा परिवार है। चाहे वह हिन्दु हो या मुसलमान हो सिख़्ख हो या ईसाई हो।

हम सब एक परिवार के सदस्य है, सवाल धर्म या लिबाज का नहीं देश की अमन, शान्ती व विकास का है....और देश का विकास अमन, शान्ती और एकता....यह जबाबदारी सिर्फ सरकार की ही नहीं बल्कि हमारी भी है।

क्योंकि जिस घर में हम रहते हैं...यसा जिस जगह बैठते है....तो उस जगह या घर को साफ–सुतरा रखना शान्ती रखना हमारा दायित्व है।

❖ सरकार को कौन बताता है..? आप जनता एक आम भारतीय नागरिक, क्योंकि आपके पास एक परिवार के मुखिया याने देश के प्रधानमंत्री को चुनने का अधिकार है और अधिकार से बड़ा कोई नहीं। अगर सरकार के पास सत्ता का पावर है...तो आपके पास अधिकार का और अधिकार ही बदलता है इस दुनिया की तकदीर....

जिस तरह ईश्वर ने इन्सान के अपने कर्म करने का अधिकार दिया है, जिससे इन्सान अपनी तकदीर खुद लिखता है...उसी तरह हर भारतीय नागरिक का अधिकार देश का भविष्य लिखता है।

सर्वप्रथम देश के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण के लिए आवश्यक है।

1) व्यक्तित्व का निर्माण, 2)परिवार निर्माण, 3)समाज निर्माण 4)ग्रामनिर्माण 5) क्षेत्र निर्माण, 6)राज्य निर्माण 7) केन्द्र व भारत निर्माण.

और यह हर नागरिक का फर्ज़ है कि हम अपने परिवार समाज व देश को

सुसज्जीत बनायें। हमारा अधिकार इतना रास्ता नहीं की हम चंद सिक्कों व एक बोतल शराब व कम्मल में बेच दे या अपना मत किसी ऐसे व्यक्ति को दे दे...जो हमारे अधिकार का दुरुपयोग करें।

- अपना अमूल्य मत किसी को देने से पहले सोचे समझे कि उस व्यक्ति की छबी क्या है, भूतकाल एवं वर्तमान काल में उसने देश व समाज के लिए क्या किया है, क्योंकि आप देश की सरकार (भविष्य) को चुनने जा रहे हैं। अपने मत के इटों से देश की इमारत (सरकार) बनाने जा रहे हैं.....देखना ज़रुरी है कि इस इमारत की नींव कही से कमजोर तो नहीं..? और नीव कमजोर होने से इमारत गीर भी सकती है। जिसमें रहने वाले आप और हम ही नहीं, बल्कि देश के आने वाली पीढ़ी (भविष्य) के बच्चे भी है। हम अपने साथ–साथ देश के भविष्य को भी दफन न कर दे। एक ईंट कमजोर होने से अरबों–खरबों की जान जा सकती है....और वो है आपका मत, आपका अधिकार और स्वर्ण भारत का निर्माण।
- अगर हम जीस बस में सफ़र कर रहे हैं, और उस बस का चालक अगर अंधा है तो जाहिर सी बात है कि गाड़ी खाई में गिरेगी और हम सब मर जायेंगे। इसलिए ईश्वर ने हमें देखने व जाँचने के लिए आँखें और सोचने समझने के लिए दिल व दिमाग दिया है की हमारी गाड़ी का चालक कौन और कैसा होना चाहिए।

आजकल हमारी नजरों व रिसर्च के दौरान यह देखा गया है कि घरो–घरो में समाज, मोहल्लों में, गाँव–गाँव, शहर–शहर में लोग अलग–अलग पार्टी व दलों में विभाजित हो रहे हैं।

घर–घर में राजनीतियाँ खेली जा रही है। बाप–बेटों के बीच....पति–पत्नी व

भाई–भाईयों के बीच...सगे संबंधीयों के बीच दाँवपेच व षड़यंत्र रचे जाते हैं। सिर्फ एक कुर्सी की खातिर।

फिर इसमें देश की अमन, शान्ती, एकता व विकास कैसे सम्भव हो सकती है। क्योंकि इन चीज़ों पर गौर करने की किसी को फुर्सत हीं नही...सभी उलझे पड़े है अपनी–अपनी रोटियाँ सेंकने के लिए।

- मुँह देखी और दुगली राजनिती...कुछ लोग करते हैं, अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए। कुछ लोग जिन्हे देश समाज व भविष्य की व आम जनता की परवाह नहीं होती। और यह काम करते हैं अक्षर....समाज के सज्जन ठेकेदार।

यह जानते हुए भी कि हम अपने गाँव, शहर, राज्य व देश की ड़ोर किसके हाथ में दे रहे हैं। कुल मिला कर बात यही तक सीमित नहीं.....

दूसरी तरफ गलती व अपने अंधविश्वास पर हम आम जनता भी कुसुरवार है कि हम इनकी दोगली व खोखली बातों, भाषण पर विश्वास कर लेते हैं, जो अपने व्यक्तिगत फायदे के लिए हमे ग़लतफहमी का शिकार व हमदर्दी की चादर फैलाकर हमसे अपने अमूल्य वोट व अधिकार बटोरते हैं। इसे राजनिती नहीं कुटनिती कहा जाता है।

राजनिती है राजाओं की निती, जो सार्वजनिक, अर्थ व्यवस्था व सभी लोगों के सार्वजनिक लाभ में हो।

"मुल आवश्यकतायें"

(समस्या व समाधान)

भारत का हर नागरिक आज़ाद है और अपने तथा अपने परिवार के भविष्य के लिए सोचने समझने व कुछ करने कहने का सभी को अधिकार है। अगर हम जागरुक और समझदार है तो हमारा फर्ज है, लोगों को जगाना, समझाना और सही रास्ता दिखाना...अगर हम सही रास्ता न दिखा सकें तो गलत रास्ता भी न दिखायें।

- ❖ किसी के दबाव या बहकावे, मीठी–मीठी खोखली बातों में आकर कोई फैसला न ले। अपने बच्चों के भविष्य का फैसला आप खुद अपने मन वचन व शान्ती से ले....खुब सोचे समझे और अपना अमूल्य वोट देकर देश का उज्ज्वल भविष्य बनायें, क्योंकि मन की शान्ती का फैसला हमेशा फलिभूत होता है। वही करो जो आपका मन कहे। मजबूरी में कोई भी फैसला न ले...आप एक देश की सरकार और भविष्य ही नहीं बल्कि आप ने बच्चों की आने वाली पिढ़ी का निर्माण करने जा रहे हैं।
- ❖ किसी के सत्ता में आने से पूर्व चुनाव के समय– सभी लोग गाँव, शहर, मुहल्ले में एकत्रित होकर, एकता के साथ सलाह, मशवरा एवं देश तथा समाज की सार्वजनिक मूल अ अवश्याकता व गंभीर समस्याओं पर विचार करें, जो सभी के हित में लाभदायक हो....और जिससे देश व समाज का कल्याण हो।

पहले स्थान पर केन्द्र स्तरीय समस्याये –

1) जैसे इस समय की सबसे गंभीर समस्यायें है–

बिजली, पानी, रोजगार व महंगाई इत समस्याओं को सांसद निधी से पार्लामेन्ट में राजिस्टर कराये, जिसके निराकरण की अवधी होनी चाहिए, उसे 4 वर्ष वर्ना अविश्वास प्रस्ताव देकर जनता पुन चुनाव करावा कर सरकार बदल सकती है।

द्वीतिय स्थान पर है– राज्य स्थरिय समस्यायें–जैसे,

1) कृषि के क्षेत्र में, बिजली, पानी, उन्नत खाद एवं बिज एवं फसल बीमा

2) शिक्षा के क्षेत्र में, सरकार शालाऐं, उच्च शिक्षा, शिक्षक की आपूर्ति व

3) रोजगार के क्षेत्र में, बेरोजगार, युवाओं को एसेम्ब्ली एवं पार्लामेन्ट में 50ः आरक्षण व बेरोजगार भत्ता, वृद्धावस्था पेन्शन।

4) ग्रामिण विकास राहत.

"मूल आवश्यकतायें"
(समस्या, समाधान व संबोधन)

आज हमारे देश की सबसे गम्भीर समस्यायें है।

गरीबी, बेरोजगारी व महंगाई व समाज में फैला भ्रष्टाचार।

- आज हमारे देश में 80: गरीबी और बेरोजगारी से जुझ रहे हैं और 99: लोग महंगाई की मार सह रहे हैं। इस वक़्त देश की हालत पहले से भी बूरी कगार पर है और इस पर सरकार कोई ध्यान नहीं दे रही है।
- सरकार योजनायें तो बनाती है और पार्लामेन्ट से एसेम्ब्लीज तक फन्ड्स भी आते हैं, मगर एसेम्ब्ली से ग्राम पंचायत तक आते ही फण्ड 95: गायब व 5 प्रतिशत राहत गरीबों तक पहुँचती है, जिसमें भी मुँहदेखी राहत टके सेर हो जाती है।
- किसी भी योजनाओं की राहत (राशी) जनता तक बहुत कम पहुँच पाती है। बाकि की राशी राजनेताओं, कार्यकर्ताओं व सरकारी कर्मचारीयो में बट जाती है और गरीब बेरोजगार, नागरिक बेचारा भुखा मरता है और सरकार को कोसता है। मगर इसमें रोजगार युनियन भी आवाज उठाने जाए तो उसके भी जेब में नोट डाल दिए जाते है। जनता का ही पैसा जनता तक नहीं पहुँच पाता, बड़े शर्म की बात है। सबसे पहले तो हम इसमें समाज को कुसूरवार समझते हैं की हमारा समाज हमारे लोग भी अन्याय व भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज नहीं उठा सकते। कुछ तो नेता ऐसे भी होते हैं कि सत्ता में आने के बाद पाँच साल चैन की नींद सोते हैं और आराम फरमाते है।
- फिर अगली पंचवर्षी सत्ता के लिए जाग कर जनता की ओर भागते हैं और वोट के लिए वही सब खोखली बातें और झुठे आश्वासन। और इसी तरह हम

अंधविश्वास भोलेपन में पिछड़ जाते हैं। अगर हम यह सोचते हैं कि हम आर्थिक स्थिती से पर्याप्त हैं, हमे क्या मतलब किसी के भी हाथ लगे सत्ता....? तो बेचारे उन गरीबों की कौन सुनेगा..? जो भुख से तड़प कर मरे जा रहे हैं। आप ने तो अपने मत का दुरुपयोग कर ही दिया...अगर हर नागरिक इसी तरह लापरवाही बरते तो इसमें नुकसान आपका भी हो सकता है। आपके व्यक्तिगत लाभ की लालच पूरे समाज व देश को ले डुबेगी और डुबेंगे आप भी। इसलिए ज़रुरी है जन जागृति।

"जागृति अभियान"

(भारत निर्माण में जन भागिदारी एवं संकल्प)

- समाज व गाँव–गाँव के जागरुक व समाज सेवी संस्थाओं द्वारा, निरपक्ष जागृति अभियान चलाना चाहिए जिसमें हर कैन्डिडेट की छवी व यथाशक्ति (आचरण) की जाँच पड़ताल करके व उनके सामने हमारी सार्वजनिक व सामाजिक समस्यायें रख कर उनसे घोषणा पत्र व शपथ पत्र लेना चाहिए और साथ में टिप में यह भी लिखे कि इस .....निर्धारित समय तक यह कार्य या समस्या का समाधान नहीं हुआ तो आपको अपने पद से इस्तिफा दिलवा कर, जनता, बिना चुनाव के उस पद पर जिस किसी योर्ग्य व्यक्ति को नियुक्त करें...ये एथॉरिटी जनता की होनी चाहिए। एसेम्बली, पार्लामेन्ट या किसी दल या पार्टी की सिफारिश नहीं।
- समाजसेवा संस्थाओं के साथ–साथ इन्हीं में से हर गाँव जिले में....युवा भारतीय युवा संघर्ष समिती व ग्राम विकास निर्णायक समिती होना चाहिए। याद रहे यह समितियाँ निरपक्ष व जनकल्याण व समाज के हित में होनी चाहिए। नाही की राजनैतिक दबाव व या पक्षपात मे होनी चाहिए। कुल मिलाकर अन्याय, भ्रष्टाचार व अनेकता, आतंकवाद के खिलाफ होनी चाहिए और सत्य व शांती को स्थापित करने वाली होना चाहिए। यह खुद एक प्राईवेट ळवअजण है...जो समाज व गारमेन्ट पर कड़ी नज़र रखती है.... ।दजपबहतमचबजपवद भ्रष्टाचार निरोधक दस्ता (समुह) समाज में हो रहे भ्रष्टाचार, अन्याय, शोषण, प्रान्तवाद, आतंकवाद ऐसी कई कुरितियाँ इन पर कड़ा विरोध

करके निर्णायक कमेटी और न्ौैैण उन्हें कानून के हथकण्डे करे व समाज में शान्ती कायम करे।

नियम–1

गरीबों के हित व विकास के लिए संघर्ष करें।

राहतकार्यों व पंचायत पर पूरी नज़र रखे, हिसाब रखें।

अ) डण्स्ण।ण व सांसद के थ्नदक में आई हुई राहत राशी लागत व बचत पर ध्यान रखें।

ब) कार्य की जाँच पड़ताल करें।

क) सरकारी कर्मचारीयों, पुलिसकर्मीयों के कार्य एवं बर्ताव पर पूरा ध्यान रखें।

नियम–2

याद रहे कि अगर कोई भी युवा अपने पावर का ग़लत फायदा उठाता है और अपनी ली हुई शपथ तोड़ कर किसी भी नियमों का उल्लंघन करता है तो उसे सख़्त से सख़्त सजा दी जायेगी, क्योंकि कानून व नियम से बड़ा कुछ नहीं है।

नियम–3

युवा संघर्ष समिती का हर युवक हतंकनंजम पढ़ा–लिखा व समझदार होना चाहिए.... इसमें भी ग्राम व जिला स्तर व राज्य केन्द्र स्तर पर अध्यक्ष, उपाध्यक्ष व सचिव, महासचिव जिसमें चयन किया जायेगा।

अ) युवाओं भारतीय युवा सेना द्वारा चुने गए सभी अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष, सचिव, महासचिव समाज व गाँव शहर की अर्थव्यवस्था व सार्वजनिक समस्याओं के समाधान हेतू आम जनता की आवाज को जनआन्दोलन के माध्यम से राज्य व केन्द्र सरकार के कानों तक पहुँचायेंगे।

ब) इस पूरे समाज कल्याण कार्य में निःशुल्क योगदान देना होगा...क्योंकि सरकार के बाद आप युवाओं के कंधे पर पूरे समाज व देश का भार होगा।

नियम –4

भारत द्वारा घोषित की हुई योजनायें व अनुदान राशी पर पूरा ख़्याल रखेंगे और उसे जनता तक पहुँचाने में भी सहायक रहेंगे।

नियम–5

हमारे समाज, देश व भारतीय संस्कृति के मान मर्यादा वेशभूषा, उच्च नीच, दुर्व्यवहार व देशज्ञ की संपदा का पूर्ण ध्यान रखें।

नियम–6

समाज में एक दूसरे को सही सलाह दे और सहायता करें, जैसी भी आपसे बन पड़े।

नियम – 7

अपने–अपने यथा स्थान पर ही कार्यरत रहना है....जिसमें साप्ताहिक जनसभा में अपनी भागीदारी देना आवश्यक है और समय–समय पर जीलास्तरीय बैठक में भी।

नियम–8

भा.सु.सं.स. के युवा कार्यकर्ताओं को कोई भी मासिक तनख़्वाह नहीं होगी। यह भारत व समाज निर्माण के लिए युवाओं की निःशुल्क समाजसेवा होगी, जिसके

बदले में रोजगार गारन्टी योजना के अनुसार युवाओं को रोजगार या रोजगार (बिजनेस) करने के लिए जो प्रधानमंत्री ऋण योजना के तहत जो लोन या राहत, अनुदान राशी उपलब्ध कराई जायेगी, जैसी आपकी पात्रता होगी।

3. आर्थिक समस्यायें व समाधान

नोट : आज हमारे देश की आर्थिक समस्यायें बड़ी गंभीर है।

जैसे : बेरोजगारी, महंगाई व गरीबी....

यह तीनों अर्थव्यवस्थायें इस समय इतनी गम्भीर हो चुकी हैं कि सरकार के ठोस कदम उठाये जाने पर भी कोई हल नहीं निकल पा रहा है।

- ❖ हमारी रिसर्च के दौरान इस समय देश में 95 प्रतिशत बेरोजगार युवा बच्चे व बुजूर्ग गरीबी और भुखमरी की मार सह रहे हैं।
- ❖ कहीं सुखाग्रस्त, तो कहीं फसल नुकसान, तो कहीं आँधी तूफान व भुकंप, तो कहीं आतंकवाद से बेघर, बेसहारा, भूमिहिन हुए लोग अपना जीवन यापन करने या दो वक़्त की रोटी कमाने की फिराक में ढुँढ़ते रोजगार ....न रोजगार है न रोटी, कपड़ा और मकान...इस हालात में रोज के हजारो गरीब भूख से तड़प कर मर रहे हैं...मगर सरकार इस पर कोई भी विचार विमर्श नहीं कर रही हैं।
- ❖ अगर कहीं किसी को राहत मिलती भी है तो मुँह देखी या पॉलिसी से। और ऊपर से महँगाई की मार। इस वक्त 99ः लोग महंगाई की भारी मार सह रहे हैं, जिसका आकड़ा इस प्रकार है।

संख्या :	कमाई	खर्च	बचत
20.25ः प्दमतपमजतपं	50 दृ 70	60	10.10 त्ेण
20ः डपककसम ब्सें च्मवचसम	150 दृ 200	100 दृ 150	20 दृ 50 त्ेण
30ः स्वू ब्सें	100 दृ 50	80 दृ 40	20 दृ 10 त्ेण
25ः बेरोजगार.चववत	50 दृ 50	60 दृ 70	कर्ज में
5ः त्पबी थ्ंउपसपमे	स्ंबे	स्ंबे	च्तवपिज में

कुल मिलाकर 95ः लोग बेरोजगार और गरीब है। अगर सरकार इन समस्याओं पर कोई ठोस कदम ना उठाये तो पूरा देश एक दिन भूख मर जायेगा, क्योंकि काम करने वाले अगर मज़दूर हीन रहें तो, व्यवसाय कैसे चलेगा..? और व्यवसाय नहीं होगा तो कुछ भी संभव नहीं है।

अगर हम किसी समस्याओं पर सवाल उठाते हैं तो ळवअजण या नेता लोग कहते हैं– ळवअजण के पास इतना पैसा कहा हैं..? पिछले साल विदेशी मुल्क से उधार लिया था, सरकार अभी 250 हजार करोड़ के कर्ज में हैं।

तो हम पूछना चाहते हैं, सरकार से– हमारा देश एक कृषि प्रधान देश है... और पूरे देश में 75ः लोग खेती करते हैं। पूरे विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जो कृषि प्रधान देश है, और उपज भी सबसे अधिक है। क्योंकि यहाँ भी जल, वायु एवं सामान्य शुष्क एवं गरम है, जो समय–समय पर बदलते रहता है, इसीलिए यहाँ हर किस्म का अनाज व साल में 3 फसलें उगाई जाती है और अन्य देशों का ऐसा नही है। जिस देश से अन्य देश को कर्ज सहायता देना था, वहीं देश आज अन्य देश से कर्ज ले रहा है...यह हमारे लिए बड़े शर्म की बात है, कि घर में बाप डाक्टर और दवाखाना है....और बेटा पड़ोस के क्लिनिक में ईलाज करायें।

कुल मिलाकार सरकार की लापरवाही एवं कानून अर्थव्यवस्था की कमी है। जीतना की सरकार के कोटे में प्दबवउम चतवपिज है...उसका 50ः भी जनता के लिए अर्थव्यवस्था पर खर्च नहीं होता है। सब एक प्रधान से लेकर मिनिस्टर तक थ्नदके क्पअपकमक हो जाते हैं....और जनता तक पहुँचता है 25–20ः ...वो भी मुँह देखा या पॉलिसी होती है।

सरकार के फंड में जो प्दबवउम **राशी आती है, वो है–**

1)भारतीय रेल विभाग, आयकर विभाग, परिवहन विभाग, वन विभाग, उद्योग...ऐसे कई बड़े–बड़े विभाग है, जिनसे अरबों खरबों की तायदात में प्दबवउम होता है, जिसमें से प्दअमेजउमदज 25ः ए 75ः चतवपिज...जिसका क्पअपकंजपवद होता है।

हिन्दुस्तान में ऐसे कई बड़े–बड़े उद्योगपति हैं, जिन्हें अरबों–खरबों का च्तवपिज होता है...मगर ळवअजण को ैवू करते है स्वे या 20ः प्दबवउम जो ैपजम डवदमल है और 80ः ठसंबा उवदमल का तो हिसाब ही नहीं। वे अपनी जगह पर ठीक हे...और ळवअजण अपनी जगह पर...क्योंकि ळवअजण भी अपनी म्गजतं प्दबवउम कार हिसाब पब्लिक को नहीं देती, उसी तरह उद्योगपति भी अपना पूरा हिसाब ळवअजण को नहीं देते। मगर ळवअजण ने अपने देश की इस गम्भीर समस्याओं को देखकर कभी थ्नजनतम के बारे में या बापू के सपनों के बारे में नहीं सोचा, की बापू का जो सपना देश को ''स्वर्ण भारत'' बनान का था, इसपे कोई ठोस कदम उठाये या कोई योजनायें लागु करें की हमारा देश, विश्व के शिखर पर उन्नती व विकास का तिरंगा लहरायें।

बापू के सपनों को साकार करने या देश को ''स्वर्ण–भारत'' बनाने के लिये मैने हमेशा सोते–जागते उठते–बैठते सोचा है और सोचते–सोचते 7 साल हो गये है, जिस पर कुछ हल निकल पाया है। और यह तय है कि अगर यह अभियान या योजना लागू कर दी जाये तो आनेवाले अगले पाँच सालों में हमारे देश की गरीबी बेरोजगारी और भूखमरी मिट जायेगी और यहाँ तक की मजदूर भी काम पर कार से जायेगा...और हमारा देश विदेशों को कर्ज या सहायता देगा।

जिसका सालाना आयकर विभाग के पास जनता से 40 से 50 हजार करोड़ रुपयों का ज्नतदवअमत होगा....वो है ऋषि क्षेत्र...।

"ऋषि समस्या– समाधान एवं संशोधन"

जिन्हें तीनों फसले मिलती हैं–

1) कृषि हमारे देश का मुख्य व्यवसाय है, यहाँ अन्य देशों से अधिक उन्नतिशील है। यहाँ खरी, रबी और ग्रीष्म कालीन एक वर्ष में किसान अपने खेती से तीन फसलें पैदा कर सकता है। यदि– बिजली, पानी व उन्नत बीज मुहय्या करा जाये तो, हमारे देश में कुल 75 से 80 प्रतिशत कृषक खेती करते हैं, जिसमें से सिंचीत किसान 10 प्रतिशत है, जिन्हें भी पूरी तरह बिजली, पानी व अच्छा उन्नत बिज उपलब्ध नहीं हो पाता। इसीलिए जीतना खर्च वे फसल पैदा करने में लगाते हैं, उससे कई गुना नुकसान सहना पड़ता है और सरकारी तथा साहुकारी कर्ज में डुब जाते हैं या आखिर आत्महत्या करनी पड़ती है।

दूसरे नम्बर पर आते हैं, मध्यवर्ती किसान– जिनकी प्रतिमात्रा है 20ः ....यह किसान मध्यवर्ती किसान है, जिन्हें पानी उपलब्ध है, तो बिजली नहीं....ज़मीन उपलब्ध है तो उन्नत फसले नहीं और जिन्हें दो फसलें मिलती है रबी व खरी की...गेहू, चावल, गन्ना, सोयाबीन, अरहर आदि जिनके पास 10 से 100 एकड़ ज़मीन है, जिसमें से सिंचीत ज़मीन है 10 एकड़ वह भी बराबर नहीं, बाकी 90 एकड़ ज़मीन, जिसमें रबी की एक ही फसल उगा पाते हैं। जिसमें लागात होती है, 30 से 40 हजार रुपया प्रति एकड़, जिसकी पैदावार होनी चाहिए 3 गुना....90 हजार से 50 लाख तो होती ही है। 10 से 20 हजार ....20 से 30 हजार प्रति एकड़ कर्ज में।

तृतीय वर्ग के किसान– जिनकी संख्या प्रतिशत है 40ः .....यह किसान जंगली व घाटी इलाकों के हैं, जिनके पास ज़मीन तो है, मगर बिजली और पानी नहीं, जो

सिर्फ अपने खेती से एक ही फसल निकाल पाते हैं, वो है (रबी) बरसात की फसल। बाजरा, मका, जवार, हरहर, सोयाबीन, कोदो व कुटकी...जिनका दाम बाजार में शेरटका है...मगर (आमदानी) उत्पादन नहीं।

यह किसान भी बेचारे कर्ज लेकर, तो मकान बेचकर प्रापर्टी (ज़मीन) गिरवी रखकर खेती करने के लिए सेठ, साहुकारों व सरकार से कर्ज उधार लेते हैं और फसल बोते हैं, मगर अतिवृष्टी, अनावृष्टी से फसल नुकसान हो जाती है या अंकुर भी नहीं हो पाती है। तब किसान कर्ज में आ जाता है और खुदखुशी कर लेता है, जिन्हें सरकार की तरफ से कोई फसल बिमा ना राहत....ऊपर से सरकारी बैंकों द्वारा ब्याज के साथ वसुली या कुड़की।

चौथे स्थान पर आते हैं, भूमिहीन किसान व रोजगार – जब खेती ही नहीं जो रोजगार कहाँ से..? सुखाग्रस्त पड़ गया या अतिवृष्टी, आँधी तूफान से जन धन की हानी हो गई।ैजंजम ळवअजण कहती है, उस जीले के लोकसभा का सांसद मेरी पार्टी का नहीं है, अगर हम राहत दे भी तो च्ंचनसंपतजल उस पार्टी को मिलेगी...ऐसा करो उस क्षेत्र का फसल बजट बरकरार बताते हुए उसे सुखाग्रस्त घोषित करने से रोका जाए...मरने दे लोगों को भूखा...हम तो पेट भर रहे हैं।

जनता की गरीबी, लाचारी व तबाही पर इस तरह के घिनौने समझौते किए जाते है, राजनिती के खेल खेले जाते हैं, इसमें कुसुर सरकार का नहीं है, यह कुसूर है पार्टीबाजी का। एक दूसरे को बदनाम करने का खेल, मगर हमारे ही कुछ लोग ऐसे हैं, जो हमारी आवाज को सरकार के कानों तक नहीं पहुँचाते, जिनका फर्ज़ है, जो समाज के ठेकेदार हैं।

"ऋषि विपदा निवारण व नियम"

(कैसे होगा स्वर्ण भारत का निर्माण (किसान स्वर्ण धारा से) (नियम 312 एक्ट 2009)

नियम –

किसान स्वर्ण योजना के अनुसार किसानों कि अर्थव्यवस्था व प्रगति को संरक्षीत किया जाऐ। किसान स्वर्णधारा का महत्व है, किसानों को भारत सरकार की ओर से ळवसकमद ठनेपदमे वमित....

बिजली, पानी, खाद, बीज, फसल, बिमा, ग्रेन स्टॉक आदी हर मुल आवश्यकताओं की आपूर्ति कम दर पर व किसान क्रेडिट कार्ड द्वारा 25 हजार रुपया प्रति एकड़ सिंचीत ज़मीन के लिए एवं 10 हजार रुपया असिंचीत रबी के ज़मीन के लिये, कम ब्याज की दर पर ऋण उपलब्ध कराये।

किसान स्वर्ण भारत की नीव है और ज़मीन मात्र भुमी है, यह सच है कि इस किसान स्वर्ण धारा के तहत हमारे किसान, इस ज़मीन (ऋषि) से सोना, यानि सोने के जैसी किमती फसलें उगायेंगे और देश अगले 5 सालों में स्वर्ण भारत बन जायेगा। विश्व के उस शिखर पर अपने उन्नति विकास का झण्डा लहरायेगा।

जिसके नियम व शर्तें इस प्रकार है।

नियम–1 : किसान स्वर्ण योजना के तहत हर छोटे से छोटे व बड़े से बड़े किसान को इस योजनओ के सभी लाभ उनकी योग्यता अनुसार देना चाहिए।

नियम–2 : किसानों को सिंचाई संसाधन व उपयुक्त बिजली कम दर पर उपलब्ध करायें।

नियम–3 : किसान स्वर्ण धारा नियम–3 के तहत, हर 30 से 50 हजार किसानों के

लिए सार्वजनिक जलाशय व कनहरों का निर्माण किया जाए।

नियम–4 : किसानों के सस्ते दर पर 18 से 20 घन्टे लगातार बिजली उपलब्ध करायें।

नियम–5 : किसानों को कृषि वैज्ञानिकों या नई तकनिकीयों द्वारा मिट्टी परिक्षण करवाकर किसानों का स्वर्ण शिबिर (वर्कशाप) करवा कर उन्हें नई–नई तकनिकीयाँ व उन्नत खाद बीज किटकनाशक आदि कम दाम पर उपलब्ध करायें।

"किसान स्वर्ण धारा व लाभ"

(किसान स्वर्ण धारा से भारत सरकार को लाभ

अ–1) कृषि उत्पादन के लाभ :

लाभ–1 :– किसानो के ऋषि से अधिक उन्नति व आय से,

1) आयकर विभाग की आय में वृद्धी 2) सरकार के कोर्ट में ग्रेन स्टॉक,

3) विदेशों से आयात–निर्यात में बढ़ोतरी, 4) महंगाई से मुक्ति.

आयकर विभाग को कैसे होगा किसानों से लाभ..?

–जब अगर हमारे किसानों की स्वर्णधारा के तहत आवश्यकताओं की आपूर्ति हो जाती है, तो वहीं छोटे से छोटा किसान जिस ज़मीन पर पत्थर बिनता था, उसी एक एकड़ ज़मीन से अगर 30 से 50. हजार की एक फसल से आमदानी करता है तो 5 एकड़ में 1,50,000ध्. से 2,00,000ध्. लाख की आमदानी करता है।

इसी तरह अगर वह साल में दो फसलें उगाता है तो 3,00,000ध्. से 4,00,000ध्. लाख रुपयों की आमदानी करता है, जो अपनी 30ः लागत निकाल कर 2,10,000ध्. से 2,80,000ध्. रुपयों की आय करता है, जिसमें से भारत सरकार की 15ः कर निकाल दिया जाए। 2,00,000ध्. से 2,50,000ध्. रुपयों की अगर एक साल में आमदानी करता है, तो फिर बेरोजगारी और गरीबी ही कहाँ, जो खुद ळवअजण को 5ः कर (प्दबवउम ज्ंग) दे रहा हो। यह आकड़ा सिर्फ एक एकड़ वाले किसान का है, अगर इसी तरह हमारे पूरे भारत के स्वर्ण धारक किसान उन्नती करें और भारत सरकार को आधी

छूट पर कर दें तो कुल 65 करोड़ 58 लाख किसान कितना कर देंगे, जिसमें अधिकतर 10 से 100 एवं 100 से 500 एकड़ ज़मीन वाले भी किसान हैं।

1) अगर हमारा एक एकड़ ज़मीन वाला सिंचीत किसान, साल में दो फसलों से अपनी कुल लागत निकाल कर 2 लाख रुपया ही बचाता है, जो पहले दो वक़्त की रोटी के लिये मोहताज था, और आज वो लखपति है।

   जब वह एक एकड़ ज़मीन वाला भी मजदूर किसान लखपती है, तो 10 एकड़, 100 एकड़ और 500 एकड़ वाले क्या होंगे। जिससे पूरे भारतीय किसानों का आयकर के पास 50 हजार करोड़ से भी अधिक ज्नतद वअमत होगा। अगर भारत सरकार के पास ही जब इतना पैसा होगा तो भारत सबसे धनी देश होगा।

2) दूसरा लाभ यह की, किसानों के द्वारा स्टाक किया हुआ अनाज अगर खुद ळवअजण अच्छे दाम पर खरीद कर, किसानों को लाभ दे और खुद अपने ळवअजण ळतंपद ैजवबा करके प्राईवेट व्यापारी तथा देश विदेशों से आयात–निर्यात करें, या अच्छे दाम पर बेचे और सरकारी राशन की दुकान द्वारा गरीब, अनाथालय व बेरोजगार लोगों के लिए 70ः छूट पर उपलब्ध करायें।

3) अगर हमारी भारत सरकार विदेशों से अनाज के बदले केरोसीन, डिजल, पेट्रोल, स्पात आदी चीज़ों का आयात–निर्यात भी करती हैं तो हमारे देश में महंगाई घट कर सामान्य हो जायेगी और किसी को भी महंगाई की मार नहीं सहनी पड़ेगी। अगर महंगाई नहीं तो सभी को भारी बचत होगी, हर नागरिक तरक्की करेगा, देश तरक्की करेगा और बापू के सपनों का ''स्वर्ण–भारत'' बन जायेगा।

''जल समस्या : निवारण व लाभ''

(स्वर्ण जल धारा नियम 313–ब)

किसान स्वण धारा नियम 313–ब के तहत, इसमें हर किसान को सिंचीत बनाने के लिये यह योजना लागु हो।

1) घनी आबादी क्षेत्र में हर 30 से 40 हजार किसानों या 2000 एकड़ ज़मीन के लिये सार्वजनिक बड़े जलाशय बनायें जाए, जिसका लाभ सभी को हो।
2) कम आबादी वाले क्षेत्र में 5 से 10 हजार यानी 200 एकड़ ज़मीन के लिये छोटे टेम व तालब बनाये जाऐं।
3) मध्य आबादी क्षेत्र में 10 से 20 हजार यानि 1000 एकड़ ज़मीन के लिए मध्य श्रेणी के जलाशय बनाये जाऐं।
4) अगर जहाँ संभव नहीं है और किसान असिंचीत है, उन्हें ''जंच कंउ या किसी बंजर ज़मीन में सार्वजनिक तालाब योजना दे 100 से 200 यानि 100 एकड़ ज़मीन के लिए।
5) इसके बावजूद भी कुछ किसान अछूते रहते हैं, तब उन्हें जीवन धारा के तहत कुआँ व तालाब खुदवाले के लिए लागत राशी प्राप्त करायें, निःशुल्क।
6) जो किसान जंगली पहाड़ी या बंजर ज़मीन वाले हैं, जो ज़मीन में एक भी फसल नहीं उगा पाते, उन्हें 'स्वर्ण हरीत क्रान्ति योजना' वृक्षारोपन, पेड़, पौधें व इमारती लकडियों वाले बन लगाने को राहत राशी दें।
7) या सरकार खुद ज़मीन को सरकारी वनविभाग के सुपूर्त लेकर किसानों को सालाना अधिकतम आय राशी उपलब्ध करायें...या उन्हें उस ज़मीन की किमत

देकर कहीं और ज़मीन दिलवायें। (जो अक्सर आदिवासी क्षेत्र के लोग हैं।)

स्वर्ण हरित क्रान्ति द्वारा सरकार को लाभ

(स्वर्ण हरित क्रान्ति (नियम 314–स)

इस योजना के तहत उपजाऊ, वन विभाग व किसानों से ैजवबा (खरीदी) हुई लकडीयों का सरकार खुद आयात–निर्यात करें। जिसमें किसान के ज़मीन से उपजी हुई लकड़ी की राशी खुद सरकार किसान को दे, खरिदी की तौर पर...या चाहे तो सरकार इसे प्राईवेट ब्वदजतंबज में भी दे सकती हैं।

1) जिसमें 'स्वर्ण हरीत क्रान्ति योजना' से सरकारी वनविभाग की आय में बढ़ोतरी होगी।
2) दूसरा लाभ इस योजना व हरियाली से वायु प्रदुषण मुक्त होगा एवं जन स्वास्थ्य पर असर पड़ेगा। लोग स्वस्थ व तंदरुस्त होंगे।
3) आयुर्वेद में पेड़ों से जड़ी बुटियों की खपत होगी, जिससे सरकार को आय होगी। आयुर्वेदिक जड़ी बुटियों का देश–विदेश के साथ–साथ आयात निर्यात होगा। जनता के लिये अच्छी और सस्ती दवाईयाँ उपलब्ध होंगी, जिससे पॉवर हाऊसों के लिये कोयले व इंधन की आपूर्ति होगी व बिजली अधिक मात्रा में उपलब्ध होगी।
4) घने जंगलों से बरसात अच्छी होगी...फसल अच्छी होगी, पशु आहार व पशु पालन अच्छा होगा।

(313–ब :– जलधारा से होने वाले लाभ–)

अगर जगह–जगह पूरे भारत में जलाशय व तालाबों का निर्माण हो तो इसका किसानों के जीवन के साथ–साथ प्रकृति व वनस्पति पर असर पड़ेगा, जिससे कई लाभ होंगे।

1) पृथ्वी में जल स्तर बढ़ेगा, गर्मी कम पड़ेगी, भुकंप व ज्वालामुखी नही होगा। वन विभाग व किसानों को भरपूर लाभ होगा। जलस्त्रोत बढ़ेगा, किसानों के सुखे कुओं व ज्नइमूमसस में जल आपूर्ति होगी, हर किसानों के कुओं में पानी उपलब्ध होगा, जो इस वक़्त खोदने पर भी नहीं मिलता।

बिजली आपूर्ति, समस्या व समाधान

बिजली संकट के कारण आज हमारे देश में बिजली की आपूर्ति नहीं हो पा रही है और नये पावर हाऊस भी नहीं खुल रहे हैं।

बिजली संकट की मार से बड़े–बड़े उद्योग ठप्प है, जहाँ बड़े–बड़े शहरों में 24 घन्टे बिजली रहनी थी, वहाँ भी 2 से 4 घन्टे की कटौती की जा रही है। मगर ग्रामीण क्षेत्रों में तो मुँह देखा अन्याय हो रहा है, जहाँ किसानों को 24 घन्टे बिजली उपलब्ध होनी चाहिए, उन्हें दो घन्टे भी बिजली नहीं मिलती। यह प्राईवेट ठेकेदारों व बिजली डिपार्टमेन्ट का ही कुसूर नहीं, इसमें एसेम्बली की लीडरशीप व क्षेत्रीय सांसद विधायकों की भी लापरवाही व अनदेखा हाल....जहाँ पार्लामेन्ट से बिजली का आदेश पारित होता है कि, किसानों को 18 घन्टे बिजली उपलब्ध करायी जाये एवं औद्योगिक क्षेत्र में 12 घन्टे बिजली व 6 घन्टों की कटौती, कर बचत की जाये। तब यही राज्य सरकार व पार्लामेन्ट के भी कुछ सदस्य मिलकर औद्योगिक क्षेत्र के बिजली की कटौती न करके किसानों से 6 घन्टे के बजाय 12 घन्टे की कटौती करके, इसी में से 6 घन्टे की बिजली उद्योगपतियों को बेचकर पैसा कमाते है। जिन्हें 6 घन्टे की कटौती करनी थी उन्हें 8 घन्टे म्गजतं कुल 22 घन्टे बिजली देकर पार्लामेन्ट में ैवू करते हैं, किसानों की बिजली आपूर्ति 18 घन्टे बिना कटौती किए व उद्योग क्षेत्रों में 12 घन्टे। 6 घन्टे की कटौती व बचत क्यों..? क्योंकि गरीबों की आवाज़ को उठाने व सुनने वाला कौन है, अगर आवाज़ उठती भी है तो उन्हें दबा दिया जाता है या बिजली चोरी के जुर्म में बिजली डिपार्टमेन्ट कुड़की कर ले जाता है, जुर्माना होता है। भुखे भी मरो और आवाज़ उठाओ तो कुड़की और जुर्माना...ये कहाँ का न्याय है..?

अगर ऐसा अन्याय व छल कपट चलेगा तो देश कैसे तरक्की कर पायेगा..? जो दूसरे को अनाज खिलाता हो, अगर वहीं अन्नदाता भीख माँगे..? कैसे होगी बिजली आपूर्ति व लाभ..?

बिजली आपूर्ति के उपाय एवं इससे होने वाले लाभ

नई तकनिकी से बिजली उत्पादन....जैसे कि, अभी–अभी हरयाणा में कुछ जगह नये प्रायोजिक जैविक पावर हाऊस बनाये गए हैं। जो गाय, भैस, बैल आदी पशुओ के गौमुत्र तथा गोबर द्वारा बिजली उत्पादन कि गई है। अगर हर जिले या राज्यों में इसी तरह 11 हजार से 35 हजार टवसजे के पॉवर हाऊस बनाये जाऐं, जिससे कि सम्पूर्ण देश में बिजली की 24 घन्टे आपूर्ति की जा सकती है, क्योंकि वैसे भी ज़मीन में कोयले की मात्रा बहुत कम बची हुई है और अन्य जगहों पर कोयले की खोज करने नई खदाने शुरु की जाए और पावर हाऊस बनवाये जाऐं।

इन दोनों तकनिकियों से मिलकर बिजली की आपूर्ति की जायें। जैसा की पहले स्वर्ण–हरित क्रान्ति वाले नियम व लाभ 'ब' में बताया गया है कि वन उत्पादन से कोयले की बढ़ोतरी उसे इन पावर हाऊसों में उपयोग करें। जिससे की बचे कुछ ही बेरोजगार युवा व व्यक्तियों को रोजगार मिले।

- जैविक पावर हाऊस से होने वाले विशेष लाभ।
- पशुपालन से किसानों व सरकार सभी को।
- पावर हाऊस से उपयुक्त गोबर व गौमुत्र, बिजली की आपूर्ति एवं बढ़ोतरी।
- पावर हाऊस से उपयुक्त बिजली, गैस ईंधन के रुप में व जैविक गोबर खाद,

- जिसे सरकार अपने कोटे में स्टाक कर किसानोां को कम दाम में उपयुक्त करा सकती है।
- गैस राह भी सरकार अपने कोटे से जनता को ईंधन के रुप में बेच सकती है।
- बिजली किसानों व जनता को प्रति युनिट के दर पर उपलब्ध कराती है।
- गोबर व गौमुत्र से किसानों को लाभ, सरकार को बेचने से होगा या
- किसान निःशुल्क गौमुत्र व गोबर दो और सरकार से निःशुल्क खाद ले। या
- तीसरा बिजली आपूर्ति का उपाय भी इसी तरह नई तकनिकी से है, जिसमें जलाशयों का होना ज़रुरी है।
- ॅजमत च्तमे च्वूमत भ्वनेम यह पावर हाऊस न कोयले से न किसी अन्य द्रव या ईंधन पर चलने वाला है...यह सिर्फ पानी के बहाव व दबाव से बनने वाली बिजली डमहं च्वूमत भ्वनेम है, जिसकी तकनिकी मेरे पास क्मेपहद की हुई है, जिसे मैने बचपन में प्रयोग किया और सफल रहा.... कम लागत में अधिक उपजाऊ बिजली।
- जो किसान स्वर्ण जल धारा वाली योजना के लाभ से जुड़ा यही पावर हाऊस दूसरे जलाशय भी बनवाने की ज़रुरत नहीं पड़ेगी।
- अधिक पावर हाऊसों से शिक्षित व बेरोजगार युवाओं की नियुक्तीयाँ होंगी, विभाग बढ़ेगे, रोजगार मिलेगा।
- पशुपालन बढ़ेगा, पशुओं से गौमुत्र, चर्मउद्योग बढ़ेंगे, दूध की खपत व वृद्धी होगी, किसानों व बेरोजगारों की आय होगी।

बिजली की आपूर्ति से औद्योगिक क्षेत्रों में लाभ

- बिजली आपूर्ति होगी, नई–नई फैक्ट्रीयाँ व उद्योग खुलेंगे,
- और बेरोजगारों को रोजगार व नौकरीयाँ मिलेंगी।

- बिजली की बढ़ोतरी से म्समबजतवदपब च्तवकनबजे की ख़पत बढ़ेगी। जितने उद्योग व खपत बढ़ेगी, सरकार को उतनी ही कर व सेल टैक्स की आय होगी।
- किसानों को कृषि उपयोगी सयंत्र कम दाम पर उपलब्ध होंगे।
- बिजली होगी शिक्षा में विकास होगा, जो ग्रामिण क्षेत्रों के बच्चों, विद्यार्थियों को असुविधा है, उन्हें सुविधा मिल जायेगी, रिजल्ट अच्छे रहेंगे।
- तकनिकी क्षेत्रों में विकास होगा, टेलीकॉमिनी के सब इन्टरनेट, कम्प्युटर्स सभी को सुविधाऐं होंगी। बच्चे नेट व कम्प्युटर्स से जुड़ेंगे, समाज में विकास होगा।

इसी तरह एक से अनेक सुविधायें उपलब्ध होंगी व सभी को लाभ होगा।

रोजगार

भारत सरकार ने बेरोजगारी पर काफ़ी ठोस कदम उठायें और नुकसान भी सहा, मगर सरकार मजदूरों को बेरोजगारी से मुक्त नहीं करा पाई न ही सही तरीकों से योजनाओं का लाभ रोजगारों व जनता तक पहुँच पाया। अगर पहुँचा भी तो उसी तरह मुँह देखी योजना व पॉलिसी....किसी को भेर पेट तो किसी को ढकाल तक नहीं न निवाला....बाकि माल पंचायत बाड़ी तक या तो जिला स्तर से ही गायब और सरकार के सामने सालाना रोजगार योजना बजट पहुँच गया। इतने करोड़ बेरोजगारों को प्राप्त कराई गई योजनाओं का लाभ। जिस तरह सरकार ने रोजगार गारन्टी योजना, प्रधानमंत्री राहत कोष

बेरोजगार भत्ता व पेन्शन : मुँह देखा या चापलूसी।

रोजगार गारन्टी : योजना पता चला कोई गारन्टी नहीं।

वृद्ध अवस्था पेन्शन : अमीर व भुमिवाले वृद्धों को दी जाए जिन्हें कोई समस्या नहीं।

जिन्हें समस्या है, उन्हें 500 रुपया माह के बजाय 150 रुपया बाकि सरकार के कोटे में नहीं है।

इस तरह के अन्याय होते हैं, गरीब जनता व बुजूर्ग बेसहारा लोगों के साथ, जिसकी कुसूरवार सरकार नहीं, हमारे ही समाज के जागृत लोग हैं, जो आँखों देखे अन्याय व भ्रष्टाचार को अनदेखा करते हैं।

इसी कारण सरकार के ठोस क़दम उठाने पर भी देश व समाज की गरीबी बेरोजगारी दूर नहीं हुई और सरकार के फन्ड से राहत भी खर्च हो गई।

इसीलिए हमने समाज में भारतीय युवा संघर्ष समिती का गठन करने की कोशिश की है। वे सरकार के बाद जनता पर पूरा ध्यान रखे एवं उन्हें ही उनका हक़ दिलायें।

बेरोजगारी से मुक्ति कैसे..?

यदी किसान स्वर्णधारा के तहत किसानों को सारी सुविधायें मिल जाती हैं। और किसान उन्नती करने लगता है, तो 70ः में से 50ः बेरोजगारी तो ऐसे ही खत्म हो जाती हैं, जो बेरोजगार कृषि संबंधित थे।

और दूसरी योजना : बिजली उत्पादन में बढ़ोतरी से खोले गए उद्योग, फैक्ट्रीयाँ व पावर हाऊस, इसके तहत बाकि 20ः से 50 प्रतिशत शिक्षित व बेरोजगार युवा व व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध हो जाता है और सारी बेरोजगारी व गरीबी इस देश व समाज से हमेशा के लिए मिट कर, देश प्रगति के रास्ते पर चलने लगता है।

जिसमें भी काम कर रहे रोजगार को, बोनस, भत्ता व पेन्शन व पार्लामेन्ट, एसेम्ब्ली में 30ः आरक्षण देना आवश्यक है, क्योंकि युवा देश का वर्तमान है।

जिसमें भी आय व श्रेणी के आधार पर पात्रता दी जायें।

25 से 30 हजार की सालाना आय से नीचे वाले मजदूर को ही यह पात्रता दी जाए।

व किसानों को– 40 से 50 हजार रुपयों की वार्षिक आय से कम वाले किसान को ही गरीबी रेखा की पात्रता दी जाए।

अति गरीब – जो भुमिहीन है या असिंचित है, उसे अतिगरीब की पात्रता व शासकिय सभी योजनाओं का लाभ दिया जाए व रोजगार भी।

टिप : किसान व कृषि एक ऐसा ज़रिया है, जिससे सभी विभाग व क्षेत्रों में लाभ होता है...अगर किसान या कृषि नहीं है तो देश बेकार है।

शिक्षा

शिक्षा का दुरुपयोग करता समाज

(शिक्षा ही महान बनाती है मनुष्य को और करती है व्यक्तित्व का निर्माण...होता है समाज निर्माण...भारत निर्माण, सुख, शांती, शिक्षा, समृद्धी, उन्नती व विकास संस्कारों से होता है। पुरुषार्थ का कल्याण व युगपुरुषों का उत्थान यही है शिक्षा का वरदान।)

हमे चलाना है यह अभियान....आओ युग निर्माण करें...स्वर्ण भारत बनायें।

शिक्षा ईन्सान के लिए एक ऐसा वरदान है जो ईन्सान को काबिल बनाती है। शिक्षा प्राप्त करने के लिए बड़े राजा–महाराजाओं को क्या–क्या खोना पड़ा। शिक्षा का मतलब पढ़ना–लिखना ही नहीं है, शिक्षा का मतलब है, किसी अच्छे लोगों के साथ संगती करना, अच्छी बातों को सुनना, अच्छे कार्य करने की क्षमता रखना, सुविचार व बुद्धीमान होना ही शिक्षा का मूल तंत्र है।

शिक्षा की उत्पत्ती व पहली सीढ़ी है। संस्कार, रहन–सहन, मान मर्यादा, बोलचाल व अगर संस्कार नहीं है तो कुछ भी नहीं।

मगर आज कल हम देखते हैं कि शिक्षा का दुरुपयोग पाश्चात्य संस्कृति व ग्लैमर के नापाक कदमों से रौंदा हुआ, हमारे देश का भविष्य व बच्चे युवा व युवतियाँ हमारी भारतीय संस्कृति परम्परायें, मान मर्यादा, शर्म हया, वेशभुषा आदी सब कुछ इन नापाक कदमों तले दफन हो गया है और हमारा समाज भी इसी पाश्चात्य संस्कृति की आग में जल रहा है और देश का आने वाला भविष्य बच्चे भी देखा

देखी वहीं कर रहे हैं, जो युवा युवतियाँ व माता–पिता करते हैं। न कोई किसी की मान मर्यादा रखता है, न सम्मान करता है। जो व्यक्ति अपनी मातृभाषा की ईज्जत नहीं कर सकता, तो वह अपने माँ की ईज्जत क्या करेगा..? आज हमारे देश के 50 से 60 प्रतिशत पढ़े–लिखे लोग जो हाईस्कूल व स्नातकतर ग्रॅज्युएशन कम्प्लिट किए हुए बड़े–बड़े डिग्री धारी लोग अपनी मातृभाषा न बोलकर अंग्रेजी को बढ़ावा देते हैं। यह हमारे व्यक्तित्व, संस्कृति व मातृभाषा का अपमान है। लोगों का मानना है कि म्दसहपी पे म्कनबंजमक च्मतेवद संदहनंहम – जीपे ै थैपवद व िवतसके ज्वकंलण अगर विदेशी वेश, भाषा हमारे ग्रेज्युएट होने की पहचान है तो फिर हमारा क्या है, अगर कोई हमें अपना अच्छा कपड़ा उतार कर पहना दे और कहें– वाह! क्या बात है, बड़े स्मार्ट हैन्डसम और ग्रेज्युएट लग रहे हो और फिर सबके सामने उतरवा लें की यह मेरा दिया हुआ था। हमारी इज्जत व पर्सनालिटी किसी के दिए हुए कपड़े की मोहताज़ है, तो इसमें हमारी इज्जत कहाँ है..? वो तो उनकी थी, जिसने छीन ली। हमारा देश, अध्यात्म व धर्मप्रेमी देश है। इसी भारत भूमि से रामायण, गीता, भागवत व महाभारत लिखी गई, जिस देश में हम रहते हैं। इसी भुमी पर, देवताओं ने अवतार लेकर लिलायें रची हैं। इसी पावन भुमी पर, भागीरथ ने स्वर्ग से आकाशगंगा लायी थी। गंगा, जमुना, सरस्वती चारों धाम तो, नौ लिंग ये सभी हमारे देश के अनमोल रतन है, एक पहचान है।

और हम दूसरों की दी हुई पहचान के लिए मुहताज हैं। नग्न वस्त्र, वेशभुषा, बेशर्मी खुलेआम चुम्मा–पप्पी, गाली गलोच, खून खराबा, चोरी डकैती, बलात्कार यह संस्कृति है। कोई इसके खिलाफ आवाज नहीं उठाता.....क्या ये आपका देश नहीं है? हो सकता है इसका असर हमारे बीवी बच्चों, घर परिवारों तक पहुँचे, सबूत व योगदान दे। इस समाज कल्याण व जन आन्दोलन में, ताकि फिर से हम इस देश

को उसकी खोई हुई सम्पत्ति मान–मर्यादा, प्रेम, शान्ति, वेशभुषा लौटा सकें। ताकि हमारा देश **स्वर्ण–भारत** के नाम से दुनिया में जाना जाये। इसके लिए हमे जो ठोस कदम उठाने होंगे,

पहला कदम – व्यक्तित्व का निर्माण– समाज निर्माण

व्यक्तित्व का निर्माण– हम सबसे पहले अपने आपका निर्माण करें।

कैसे – आध्यात्मिक विषयों पर चिंतन करें व इन्सानियत का धर्म अपनायें। (जो कुछ अवगुण हमारे अंदर छुपे हैं।) एवं हर व्यक्ति नर–नारी, देश व समाज के निर्माण का दृढ़ संकल्प लें।

परिवार निर्माण – हम स्व निर्माण के बाद अपने परिवार का निर्माण करें। घर में बीवी बच्चे, माता–पिता, भाई–बहन व अन्य सदस्यों को अच्छी बातें सुनायें, अच्छे विचार धारण करवायें, संस्कार दे, दुनिया में कुछ कर जाने का जुनून व उत्साह दे, शिक्षा दे। समाज में एक दूसरे की सहायता व काम आने की प्रेरणा दे। टिव्ही के माध्यम से समाचार व अच्छे कार्यक्रम दिखायें, जिससे की मनोरंजन के साथ जनरल नॉलेज व अंतरिक्ष दुनिया के बारे में सारी जानकारीयाँ हो।

कुल मिलाकर अपने परिवार को शिक्षित, संस्कारित, मिलनसार व उच्च कोटी का बनायें। अगर यह जिम्मेवारी हर नागरिक निभा ले तो इस धरती पर सतयुग भी आ सकता है।

समाज निर्माण – बारी आती है परिवार निर्माण के बाद समाज निर्माण की। यह थोड़ा कठीन है, क्योंकि समाज के सभी लोग एक जैसे नहीं होते। हो सकता है आपको समाज निर्माण या जनजागृति में अपमान भी सहना पड़े। अगर इसे आप

अपना कर्तव्य व संकल्प समझते हैं, तो सारी मुश्किलें आसान हो जायेंगी और आप समाज का निर्माण कर ले जायेंगें। जिसके लिए कुछ चीज़ें ज़रुरी हैं...वो है–

- आत्मसम्मान, सहनशीलता, समयदान, अध्यात्म व चिंतन। धीरे–धीरे गली मोहल्लों व जगह–जगह सत्संग, भजन, किर्तन व गोष्ठी जैसी स्थिति हो, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक ....कुल मिलकार आपको समाज में एक रात्रीशाला चलानी होगी, तभी समाज निर्माण हो जायेगा।
- इसी तरह धीरे–धीरे यह अभियान शहर व राज्य तक पहुँचेगा। लोग देखा सेखी सब इसी तरह अपने–अपने क्षेत्र, राज्य में जागृति व शान्ति, विकास, उन्नति आदी इसी अभियान के माध्यम से ले आयेंगे और पूरा भारत बापू के सपनों का **स्वर्ण भारत** बन जायेगा,
- जहाँ अमन, शान्ती, सुख–समृद्धी व विकास का शंख बजेगा। जिसमें आतंकवाद, क्षेत्रवाद, समाजवाद, उच्च–नीच भेदभाव, भ्रष्टाचार सभी जड़ से मिट जायेगा।
- आज हम देखते हैं, सउदी अरब देशों में कितनी शान्ती व उन्नतीशील देश है। क्योंकि वहाँ राजनिती नहीं, लोकतंत्र नहीं है...मुगल शासन है। न्याय का मतलब न्याय–अन्याय नहीं...ना भ्रष्टाचार, ना मिलावट, ना चोरी, ना झूठ फरेब...कुछ भी नहीं....क्योंकि वहाँ की कानून व्यवस्था सख़्त है।
- फिर भी मुस्लिम देश है...लोग सोने–चांदी की दुकाने खुली छोड़ कर नमाज पढ़ने जाते हैं, मगर इन्सान के जेब से रास्ते पर गिरा हुआ पैसा कोई नहीं उठा सकता, तो चोरी की बात दूर है।

- हमें भी चाहिए की इसी तरह सख़्त कानून व्यवस्था, जिसके लिए ज़रुरी है, जन जागृति व जन भागिदारी, लोक तंत्र को मजबूत व सक्रिय बनायें रखने की क्षमता।

बाल विकास योजना के तहत

बाल विकास– यानि बाल अवस्था के (बच्चों का विकास), जिसमें उपयोगी है–

- शिक्षा व संस्कार – गाँव–गाँव में प्राथमिक स्कूलों में, कक्षा 0 से 5 तक, रोजाना एक घन्टा संस्कार शाला चलाई जाये, जिसमें उठने, बैठने से लेकर बातचीत करने, खाने पीने, अध्यात्मीक विषयों का शिक्षण सबख पढ़ाया जाये।

याद रहें बच्चों को बच्चों के ही सहेली से पढाई जाये कि वे व्हेमतअम करे व सादा जीवन, उच्च विचार हो, बच्चे अक्षर पढ़ने से ज्यादा देखा सेखी सिखते है, उन्हें वैसे ही सीखायें।

- स्कूल से छूटने के बाद, हर माता–पिता अपने दायित्व को निभाते हुए, बच्चों को घर पर ही शिक्षा दे। लाड़, प्यार भी दें व वक़्त पड़ने पर डाँटे भी...समय–समय पर टिव्ही न्यूज, धार्मिक धारावाहिक देखेने की भी छूट दे, मगर इसके आदी न होने पाये।
- बच्चों से जीवन में कुछ करने का एक लक्ष बनायें और उसी पर ध्यान दें। प्राथमिक शिक्षा– कक्षा 6 से 8 तक बच्चों को अन्य विषयों के साथ रोजाना 40 मिनट (एक पिरियड) जनरल नॉलेज पढ़ाया जाये, जो जैसा ज़रुरी है। साथ ही सप्ताह में दो दिन 20 मिनट माजतं बच्चों की रहन सहन व उनके दायित्वों पर ब्वदबमदजतंजम करवायें।

- किसी भी प्रकार की बच्चों में शिकायत पाने पर शिक्षक उन्हें सही सलाह दें व इसकी शिकायत बच्चे के माता–पिता को सौंपे।
- शिक्षक बच्चों को जीवन में कुछ करने का एक लक्ष व उल्हास दे व उन्हें सही मार्गदर्शन करें।
- सुबह शाम स्कूल खुलते समय व छुट्टी होते समय दो वक्त की प्रार्थना सुबह राष्ट्रीय गान व शाम को ईश्वर प्रार्थना करवायें व इसके बाद रोज उन्हें दौड़ लगवाकर छुट्टी दें।
- रोजाना सारे पिरियड (विषय) पढ़ाने हो जाए तब शाम को ईश्वर प्रार्थना से पहले 10 से 15 निज योगासन व स्वास्थ्य संबंधित म्गबमतबपेम करवायें।
- माह में एक बार सभी बच्चों के माता–पिता को स्कूल की बालसभा में बुलाया जाए, जिससे की बच्चों के दिल में यह डर बना रहें की मेरी कोई ब्बउचसंपदज तो नहीं मिलेगी और माता–पिता को भी बच्चों की सही शिक्षा व प्रोग्रेस का पता चलता रहेगा। स्कूल व शिक्षा के नये कानून व योजनाओं का पता चलते रहेगा... व शिक्षकों की भी थोड़ी सी त्मेचवदेपइपसपजपमे कम होगी।
- माता–पिता बच्चे की प्रतिमाह हाजरी देखेंगे, जिससे उन्हें मालूम होगा कि हमारा बच्चा सही ढंग से स्कूल आता है, नहीं तो कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं, जो स्कूल का बहाना बना कर कहीं ओर गलत रास्ते निकल जाते हैं और माता–पिता को पता भी नहीं चलता और यही भूल बड़ा रुप धारण कर लेती है।
- शिक्षक बच्चों की दोनों टाईम हाजरी लेंगे, ताकी बच्चा बीच में पूरे दिन की क्लास ।जजमदक करें।
- माता–पिता बच्चों के घर से स्कूल जाने व स्कूल से घर आने का पूरे समय का ध्यान रखें। जैसे कहीं ऐसा भी होता है, स्कूल का रास्ता आधे घन्टे का है, बच्चा एक घन्टा पहले घर से निकल आया....उसी तरह शाम को आधा घन्टा लेट घर

पहुँचा, हो सकता है बीच के आधे घन्टे में कहीं कोई भी गलत काम कर आया हो।

- माता–पिता, बच्चों के संगती का पूरा ध्यान रखें कि कोई बूरी संगत तो नहीं, क्योंकि बूरी संगती का ज्वर सबसे भयानक होता है।
- बच्चों को हमेशा अपनों से बड़े या ज्ञानी, बुद्धीमान लोगों से दोस्ती करने की शिक्षा दें।
- बच्चों की शिक्षा, परवरिश व लक्ष जबाबदारी पर पूरा ध्यान दे, क्योंकि वह आपका गर्व है, आपकी अगली पिढ़ी, बंश का चिराग, देश का भविष्य व गौरव है। आपका अनमोल धन है। माता–पिता के लिए औलाद से बढ़कर कुछ भी नहीं है, तो फिर क्यों न हम अपने ज़िन्दगी के रौशन सबेरों को रौशन करे इस वंश के चिराग से।
- माह में दो दिन संगीत के माध्यम से गीत, भजन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम करवाया जायें।
- उच्च शिक्षा– भ्पही ैबीववस – हाईस्कूल के सभी विद्यार्थियों को उचित उच्च शिक्षा के साथ ब्वउचनजमत, ींतकूंतमए ैवजिूंततम कि म्ाजतं ब्सें व ब्वउचनजमतेए प्दजहमतदमज उपलब्ध कराये जाए, कम शुल्क पर, जिसमें इस विषय का भी एक म्ांउ होना चाहीए। जिससे कि विद्यार्थियों की ब्समंतपजल बढ़ेगी। नई–नई तकनिकियों का नालेज होगा, अविष्कार होगा। देश–विदेशों के साथ त्मसमबजपवदे बनेंगे, ठमदमपिज होगा। ब्वउचनजमतए ज्मबीदवसवहल इस युग से विधान का अविष्कृत वरदान है, जो आज के युग में बहुत ही आवश्यक है।
- हर जिले या गाँव–गाँव सायबर कैफे (ब्वउचनजमत ब्मदजमत) होने चाहीए।

- हाईस्कूल तक के सभी विद्यार्थियों को 70ः उपयोगी शिक्षा व 30ः आध्यात्मिक शिक्षा देना चाहिए, जिससे कि उनकी युवा अवस्था का बूरा प्रभाव उनके मस्तिष्क पर न पड़े।
- विद्यार्थियों के लक्ष को बरकरार व उत्तेजित बनाना चाहिए।